

Dimanche 30 juin 2024

« **Plus qu'un saint respect** » (Jérémie 32.36-41)

**Résumé** : Appréhender la grandeur de Dieu nous conduit dans un amour tremblant de joie et d'émerveillement.

**1. La crainte de Dieu, une promesse de la Nouvelle Alliance**

- La crainte de Dieu, une promesse de la Nouvelle Alliance

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

- Notre assurance de bonheur

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**2. Aimer ou craindre Dieu ?**

- L'amour et la crainte de Dieu sont-ils réellement compatibles ?

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

- Le mot « crainte » est-il le bon ?

---

---

---

---

---

---

---

---

**3. Quand la joie et la crainte de Dieu coulent d'une même source**

- Le Dieu merveilleux

---

---

---

---

---

---

---

---

- Trembler de joie et d'émerveillement

---

---

---

---

---

---

---

---